Lecture-3

Topic-Evaluation of Fascism Idealogy

Degree-III (Hons.) Paper-8D

Date-7-7-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

राज्य साध्य न होकर साधन है :-
फासीवाद राज्य को साध्य मानकर उसके लिए व्यक्ति की समस्त इच्छाओं का बलिदान कर देते हैं। इसमें व्यक्ति के अस्तित्व का कभी स्वतंत्र विकास नहीं हो सकता। मनुष्य एक चिन्तनशील सामाजिक प्राणी है। वह अपने समाज के हित व अहित को अच्छी तरह जानता है। उसका कल्याण ही समाज का कल्याण है। अन्तिम राज्य का उद्देश्य व्यक्ति व समाज का अधिकतम कल्याण करना है। राज्य व्यक्ति की इच्छा का परिणाम है। राज्य व्यक्ति की इच्छा के लिए कार्य करने का एक उत्तम साधन है। जैसे फासीवादी व्यक्ति को एक मशीन बनाकर रखते

राज्य के लिए बलिदान कर देते हैं। फासीवादी यह बात भूल जाते हैं कि राज्य एक कल्याणकारी संस्था है। जिसका उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करने में योगदान देना है। इसलिए फासीवादियों द्वारा राज्य को लक्ष्य मानना गलत है।

फासीवाद अभिनायकवाद को बढ़ावा देता है :- फासीवाद एक ऐसी तानाशाही अवस्था है जो शक्तियों के केन्द्रीयकरण द्वारा स्वेच्छा-चारिता को बढ़ावा देती है। इसमें व्यक्ति की इच्छा का राष्ट्र के प्रति अन्ध श्रद्धा के नाम पर बलिदान कर दिया जाता है। इसमें अधिकार नाम की कोई वस्तु नहीं होती। व्यक्ति की समस्त स्वतंत्रताओं को कुचलकर जिस प्रकार तानाशाही शासक व्यवहार करता है, उससे मानव समाज को हानि ही पहुंचती है।

फासीवाद कला और विज्ञान की प्रगति में बाधक है - कला और विज्ञान का विकास विचार-स्वतंत्रता पर निर्भर करता है। फासीवाद राज्य में जिला, कला एवं साहित्य पर कठोर नियंत्रण रहता है। व्यक्ति की विचार-स्वतंत्रता

पर राज्य का अंकुश लगा रहता है। साहित्य, कला, विज्ञान, दर्शन आदि का स्वस्थ विकास तो तभी संभव है, जब समाज राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में स्वतन्त्र जीवन जीने की स्थिति में हो। फासीवाद के निरंकुश शासन के होने के कारण व्यक्ति व समाज की समस्त गतिविधियों पर राज्य का कठोर नियंत्रण बना रहने के कारण कला, साहित्य और विज्ञान का विकास होना असंभव होता है।

फासीवादी अर्थव्यवस्था जन कल्याण के विरुद्ध है - फासीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन का लक्ष्य राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। इसमें पूँजीवाद का पोषण होता है और श्रमिकों का अहित होता है। फासीवाद श्रमिकों से हड़ताल का अधिकार भी छीन लेते है, ताकि वे अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज भी न उठा सके। इसी तरह इसमें आम जनता की आवश्यकताओं की वस्तुओं का उत्पादन करने की बजाय राष्ट्रीय महत्व की वस्तुओं का निर्माण करके जनकल्याण की उपेक्षा की जाती है।

CHAPTER CONTINUES...